कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

तुम तप्त-कनक सदृश प्रखरित, तव गीतों से उर रोमाञ्चित;
हृदय-पटल पर स्वर्णाक्षर से, हे **अटल** तुम्हारी आभा अंकित ।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 29, अंक 3

जुलाई-सितम्बर 2018 (विक्रम संवत् 2075)

सम्पादक

स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–

तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :

161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग

2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7

दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :

29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट

(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)

कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :

13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला,

गुलमोहर पार्क के पास

हावड़ा - 1, दूरभाष-2666–2425

–प्रकाशक–

विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय... 2
- 9 अगस्त का 'विश्व मूलनिवासी... 3
- मेरा प्रथम नैपुण्य शिविर 5
- अमृत वचन 5
- बिना सरकारी मदद श्रमदान... 6
- मुनि श्री तरुण सागर जी... 6
- केरल त्रासदी... 7
- चिकित्सा शिविर... 8
- सिंधारा उत्सव... 8
- महानगर की गतिविधियाँ... 9
- माननीय अटल जी के निधन ... 10
- अनुकरणीय... 10
- हिंदी राष्ट्रभाषा ही नहीं एक... 11
- अभिनंदन 12
- भारतीयों के लिए शर्मनाक 13
- पिंडवाड़ा में प्रशिक्षण शिविर 13
- पुरुलिया एवं झाल्दा... 14
- हर्षोल्लास से मनाया अखण्ड भारत... 14
- शोक संवाद 15
- बोधकथा : एक बूंद 16
- कविता : कदम मिलाकर चलना होगा 16

संपादकीय...

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी सदैव अमर रहेंगे

—◆◆◆—

हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा, काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूँ, गीत नया गाता हूँ...का अमर उद्घोष करने वाले भारतीय राजनीति के सर्वमान्य नेता अटल बिहारी वाजपेयी नहीं रहे। अटल जी के कई रूप थे- ओजस्वी पत्रकार, संवेदनशील कवि, कुशल राजनेता, प्रखर विचारक सबका सामंजस्य था एक भौतिक शरीर में। वे अपने जीवन में नैतिकता को सर्वोच्च स्थान देते थे। अटल जी मन जीतने में विश्वास रखते थे और यही कारण था कि विरोधी भी उन्हें प्यार करते थे और करते रहेंगे। देशभक्ति का जज्बा इतना था कि उन्होंने परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों की नाराजगी को दरकिनार कर देश में परमाणु परीक्षण किया। पोकरण और कारगिल विजय उनके जीवन के शौर्य और पराक्रम के स्वर हैं। न वे कभी हारे और न देश को हारने दिया। शांति और सद्भाव को एक नहीं अनेक मौके देने के लिए उन्होंने सीमाएं भी लांघी। *उन्होंने विश्व को बताया कि राष्ट्रीयता और भारत भक्ति का सच्चा अर्थ क्या होता है? यह अर्थ गोली नहीं गरीबी उन्मूलन में मिलता है, यह अर्थ गांव के विकास में मिलता है, यह अर्थ युवाओं के लिए टेक्नोलॉजी और उच्च शिक्षा के नए सोपान बनाने में मिलता है।* आत्मीयता की भावना में आकंठ भरे हुए विज्ञान की जय करने वाले लोकतंत्र के सजग प्रहरी अटल बिहारी के मन में सबके लिए प्रेम था। आज भारत जिस टेक्नोलाजी के शिखर पर खड़ा है उसकी आधारशिला अटल जी ने ही रखी थी। वे अपने समय से बहुत दूर तक देख सकते थे। वे स्वप्नद्रष्टा थे लेकिन कर्मवीर भी थे। कवि हृदय भावुक मन के थे तो पराक्रमी और सैनिक मनवाले भी थे। वे भारत की विजय और विकास के स्वर थे। यदि बताना हो कि उदार हृदय नेतृत्व की परिभाषा क्या है तो केवल अटल जी का नाम ही पर्याप्त है, परिभाषा स्वत: मिल जाएगी। सत्ता में आना या उससे जाना, यह उनके लिए कोई मायने नहीं रखता था। सत्ता पाने की कभी लालसा भी नहीं दिखाई और पाने के बाद उसे बनाए रखने की होड़ भी नहीं की। उनमें अहंकार नाम का नहीं था। वे जीवन भर उसूलों पर चलते रहे। वे ऐसा नेता रहे जिनके भाषण सुनने लोग पचासों मील दूर से पैदल चले आते थे। एक-एक शब्द को साधना, किस शब्द पर कितना वजन देना है, किस बात को कितनी रेखांकित करनी है, स्वरों का आरोह अवरोह क्या होता है इन सबमें अटलजी निष्णात थे। संयुक्त राष्ट्र महासभा के ऐतिहासिक भाषण में आपने कहा था- *''यहाँ मैं राष्ट्रों की सत्ता और महत्ता के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। आम आदमी की प्रतिष्ठा और प्रगति मेरे लिए कहीं अधिक महत्व रखती है। अंतत: हमारी सफलताएं और असफलताएं केवल एक ही मापदण्ड से मापी जानी चाहिए क्या हम पूरे मानव समाज, वस्तुत: हर नर-नारी और बालक के लिए न्याय और गरिमा की आश्वस्ति दे पाएं हैं क्या?''* उनका दर्शन था-

आँखों में वैभव के सपने, पग में तूफानों की गति हो।
राष्ट्र भक्ति का ज्वार न रुकता, आए जिस-जिस की हिम्मत हो।।

हमें उनकी सादगी, सहजता, व्यवहार कुशलता, परिहास वृत्ति और मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण जीवन से प्रेरणा लेकर देश हित में काम करना चाहिए। कर्मयोगी अटल जी के अतुलनीय व्यक्तित्व एवं कृतित्व को शत्-शत् नमन। ■

-स्नेहलता वैद

9 अगस्त का 'विश्व मूलनिवासी दिन' और भारत में उसकी प्रासंगिकता

– प्रमोद पेठकर, अ.भा.प्रचार प्रसार प्रमुख

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी 9 अगस्त का 'विश्व मूलनिवासी दिन' और भारत सहित विश्व में अनेक स्थानों पर इसका सार्वजनिक कार्यक्रमों के रूप में आयोजन कुछ संकेत देकर जाता है। भारत के जनजाति क्षेत्रों में इस दिन को 'आदिवासी दिवस' कहते हैं। हम यहाँ इस दिन को भारत में मनाने की क्या प्रासंगिकता है, इसके बारे में चर्चा करेंगे।

पहली बात तो ये कि 9 अगस्त को जिसे भारत में 'आदिवासी दिवस' कहा जाता है वह वास्तव में 'विश्व मूलनिवासी दिन' है। अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर यदि विश्व मूलनिवासी दिन मनाया जाता है तो उसका उद्देश्य यह कि भूतकाल में विश्व के कई देशों में वहाँ के मूलनिवासियों पर हुए अत्याचारों के बारे में समाज को जानकारी मिले और उसके माध्यम से सच क्या है वह सबके सामने आये।

पहले कभी यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका खण्ड के देशों में साम्राज्यवादी ताकतों ने स्थानीय मूलनिवासियों पर आक्रमण कर अमानवीय अत्याचार किये, उनकी संस्कृति को नष्ट किया, वहाँ अपने उपनिवेश-कॉलनियाँ बनाई। कहीं कहीं तो सम्पूर्ण मूलनिवासी समाज को ही नष्ट कर अपनी बस्ती बनाई। हमें यह जानना भी आवश्यक है कि कुछ वर्षों पूर्व ऑस्ट्रेलिया के तत्कालीन प्रधानमंत्री केविनरूड ने इस सन्दर्भ में संसद में 13 फरवरी 2008 को सार्वजनिक रूप में वहाँ के मूलनिवासियों से माफी भी मांगी थी।

आज समय बदला है। विश्व में हम परिवर्तन देख सकते हैं। जनजाति समाज में आई जागृति के कारण आज वह समाज अपने अधिकारों के लिये आगे आया है। ऐसे में वहां का जनजाति समाज 'विश्व मूलनिवासी दिन' मनाये, उनके लिये एकता प्रकट करे तो उसमें कुछ अनुचित नहीं। परन्तु भारत में इसके मनाने की प्रासंगिकता पर विचार होना आवश्यक है।

पहली बात तो भारत में मूलनिवासी कौन है ? **- भारत में सारे भारतीय यहाँ के मूलनिवासी हैं। यहाँ तो कोई न पहले आया, न बाद में। मूलनिवासी के बारे में विश्व में जो संकल्पना है, वैसा यहां कोई मूलनिवासी समाज नहीं है।** यह बात हमने कई वर्षों पूर्व अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अधिकृत रूप में कही है और आज भी भारत सरकार अपने विचारों पर अडिग है।

भारत के संविधान ने जिस समाज को अनुसूचित जनजाति के रूप में घोषित किया उसके विकास हेतु कई प्रकार के प्रयास चल रहे हैं। संविधान में जनजाति समाज के लिये कई अधिकारों का प्रावधान है। विश्व में मूलनिवासियों के अधिकारों की जो बात आज चल रही है वैसे अधिकार; उससे भी अधिक भारतीय संविधान निर्माताओं ने पहले से ही जनजाति समाज को दिये हैं। इसीलिये विश्व के अन्य देशों में मूलनिवासियों के अधिकारों की लड़ाई और भारत में जनजाति अधिकारों की बात में बहुत अंतर है।

एक बात है कि स्वतंत्रता के बाद जनजाति समाज के विकास हेतु जिन योजनाओं की सरकार ने आज तक घोषणा की है उसका लाभ वास्तव में जनजाति

समाज को नहीं मिला। सरकारी अधिकारियों के रवैये के कारण समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक लाभ नहीं पहुंचा। इसके लिये जनजाति समाज को अपनी बात करना उचित एवं न्यायपूर्ण कह सकते हैं। परन्तु विश्व के अन्य देशों में अपने अधिकारों के लिये जिस प्रकार की भाषा बोली जाती है वैसी स्थिति भारत में नहीं है।

भारत में कुछ लोग आदिवासी दिन के नाम पर अपनी राजनीति कर रहे हैं, उसे भी समझने की आवश्यकता है। जनजाति समाज को सम्पूर्ण समाज के साथ जोड़ने के बदले अलग पहचान की बात होती हो तो उसमें देशहित नहीं है। जनजाति समाज के पढ़े-लिखें युवकों को इसे समझने की आवश्यकता है। वैसे भी अपने जनजाति बन्धुओं में शिक्षा का प्रतिशत कम है। इसलिये कोई भी आए और अपनी बात कहने के बहाने कुछ भी समझाये - ये कितना उचित होगा ? 'हमें अपने अधिकारों के लिये संघर्ष करना पड़े तो हम संघर्ष करेंगे परन्तु हमारे अधिकार लेकर ही रहेंगे', यह सुनने में तो अच्छा लगता है। परन्तु भाषण के बाद आंदोलन और इसका परिणाम यदि हिंसा में परिवर्तित होता हो तो कदापि उचित नही, इससे जनजाति को ही परेशानी होगी। स्वभाव से भोले भाईयों को समझाने वाले स्वार्थी तत्व मनमानी करते रहें और हम केवल देखते रहें यह भी ठीक नहीं। जागृत जनजाति युवकों को ऐसे स्वार्थी तत्वों की मंशा को समझना होगा। इससे अपने समाज को बचाना होगा। 'आदिवासी दिन' के नाम पर यदि अलगाव की भावना बढ़ती है तो वह न जनजाति समाज के हित में है और न देश के हित में।

हमें एक बात स्पष्ट रूप में जानना आवश्यक है कि हम समाज को जोड़ने का कार्य कर रहे हैं, न कि तोड़ने का। **जनजाति समाज यह सम्पूर्ण समाज का अभिन्न अंग था और आज भी है, इसमें कोई दो राय नहीं। यदि कोई हमारे जनजाति बन्धुओं को सम्पूर्ण समाज से अलग कर उसकी अलग पहचान बनाना चाहता है तो वह देश की एकता एवं अखण्डता के लिए संकट ही होगा।** वास्तव में सांस्कृतिक विरासत को लेकर समाज को जोड़ने का कार्य करने की आवश्यकता है। देश विरोधी शक्तियाँ ऐसा न हो इसके लिये सक्रिय हैं। ऐसे में हमें समाज को जोड़ने के लिये कार्य करने की आवश्यकता है। जनजाति समाज का विकास हो इस हेतु शिक्षा, आरोग्य, रोजगार जैसे क्षेत्रों में सेवा प्रकल्प चलाते हुए विकास के प्रयास होने चाहिए। सरकारी योजनाओं को भी समाज के अंतिम व्यक्ति तक ले जाने के प्रयास होने चाहिए। परन्तु सेवा की आड़ में समाज को यदि उसकी आस्थाओं से दूर किया जाता है तो वह सर्वथा अनुचित है। जिसे 'आदिवासी दिवस' कहते हैं उस समारम्भ का मंच जनजाति समाज के हित के लिये हो। मंच की भाषा सकारात्मक हो। यही भारत में प्रासंगिक होगा। जनजाति समाज के पढ़े-लिखें लोगों को और सम्पूर्ण समाज के संवेदनशील व्यक्तियों ने क्या सही और क्या गलत का विवेक जागृत रखते हुए अपने समाज का दिशादर्शन करना चाहिए।

भारत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश वाई. के. सबरवाल के अंतर्राष्ट्रीय विधि संगठन (आई.एन. ओ.) टोरेन्टो में 2006 के इस विषय पर उनका भाषण इस विषय को पूरी तरह से स्पष्ट करता है।

9 अगस्त को विश्व मूलनिवासी दिन द्वारा जनजाति समाज के उत्थान हेतु बात हो और वह भी

सकारात्मक भाषा में हो तो उसकी प्रासंगिता रहेगी। अन्यथा भारतीय समाज को तोड़ने की भाषा के लिये इस मंच का 'आदिवासी दिवस' नाम से यदि उपयोग वास्तव में उपयोग नहीं दुरूपयोग होता है तो उसकी निंदा होनी चाहिये। इसके माध्यम से यदि राजनीति हो रही हो तो वह सर्वथा अनुचित है। राजनीति में भी कुछ नेता ऐसे होंगे जो समाज के हित में सोचते हैं उन्होंने अन्य के बदइरादों को खुली चुनौती देकर समाज का दिशादर्शन करना चाहिए। जनजाति समाज के पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने इस बात को समझते हुए कार्यक्रमों का आयोजन करना और विश्व के मूल निवासियों के लिए एकजुटता दिखाना ही भारत में प्रासंगिक होगा। ■

अमृत वचन

- मैं ऐसे भारत का सपना देखता हूं जो समृद्ध और मजबूत हो। ऐसा भारत जो दुनिया के महान देशों की पंक्ति में खड़ा हो।
- कोई बंदूक नहीं, केवल भाईचारा ही समस्याओं का समाधान कर सकता है।
- मेरा कवि हृदय मुझे राजनीतिक समस्याएं झेलने की ताकत देता है।
- मैं हमेशा से ही वादे लेकर नहीं आया, इरादे लेकर आया हूं...
- मेरे पास ना दादा की दौलत है और ना बाप की, मेरे पास मेरी मां का आशीर्वाद है।
- इतिहास में हुई भूल के लिए आज किसी से भी बदला लेने का समय नहीं है, लेकिन उस भूल को ठीक करने का सवाल है।
- देश एक मंदिर है, हम पुजारी हैं, राष्ट्रदेव की पूजा में हमें,खुद को समर्पित कर देना चाहिए।

- स्व.अटल बिहारी वाजपेयी

मेरा प्रथम नैपुण्य शिविर

–अर्चना अग्रवाल, बालीगंज महिला समिति

पूर्वांचल कल्याण आश्रम से जुड़ते ही मेरे पति अनिल अग्रवाल के साथ मुझे रानीगंज में स्थित श्री सीताराम भवन में आयोजित दो दिवसीय नैपुण्य शिविर में जाने का सौभाग्य मिला। 15 एवं 16 सितम्बर 2018 को आयोजित इस शिविर में हम लोग लगभग 80 पुरुष एवं महिला कार्यकर्ता थे। कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन हेतु क्षेत्रीय हितरक्षा प्रमुख श्री अजय सिंह पूरे समय उपस्थित रहे। शिविर का कार्यक्रम का आरंभ '**स्वयं अब जागकर हमको जगाना देश है अपना**' गीत से हुआ। श्री अजय सिंह ने वनवासी की दशा एवं अंग्रेजों द्वारा उस समाज पर किए गए अमानवीय अत्याचारों पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में श्रीमती इंदु जी नाथानी एवं श्रीमती सीमा जी रस्तोगी ने चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से कल्याण आश्रम सेवा संस्थान के अलावा यह एक राष्ट्रीय कार्य है, इस पर प्रकाश डाला एवं प्रश्नोत्तरी के माध्यम से सभी कार्यकर्ता उसमें सहभागी हुए। श्री ललित अग्रवाल ने गाय एवं गोबर की उपयोगिता एवं महत्व पर पॉवर प्वाइंट प्रजेंटेशन द्वारा हमें समझाया। रानीगंज में नवनिर्मित भव्य गौशाला को देखने हम सभी गए। सभी कार्यकर्ताओं ने मिलकर वहां 25 हजार का अनुदान दिया। श्री मनोज अग्रवाल ने सफल जीवन एवं जीवन की परिभाषा क्या है- इस विषय पर हृदयस्पर्शी व्याख्यान दिया, जिसका एक-एक शब्द नई ऊर्जा प्रदान करने वाला था। दोनों दिन रानीगंज के स्थानीय निवासी पुरुष एवं महिलाएं आई। उन्हें वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यों के बारे में अवगत कराया गया। समापन सत्र में अ.भा.नगरीय प्रमुख श्री शंकर जी अग्रवाल ने शहरवासियों द्वारा किए जा रहे कार्यों का वर्णन किया और कल्याण आश्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। ■

बिना सरकारी मदद श्रमदान करके 9 दिन में बना दिया 120 मीटर लंबा तालाब

ग्राम छागोला के ग्रामीणों ने बिना किसी सरकारी मदद के श्रम दान कर महज 9 दिन में 120 मीटर लंबा तालाब बना दिया। सरकार अगर यह तालाब बनाती तो करीब 20 लाख रुपये की लागत आती। अब इस बारिश में तालाब में करीब 3 करोड़ लीटर पानी संग्रहित होगा। शिवगंगा ग्राम समृद्धि टोली के द्वारा ग्राम छागोला में पिछले दो वर्षों से परमार्थ की भावना से जन जागरण के अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। उन्हीं कार्यक्रम के परिणाम स्वरूप पिछले वर्ष 2017 में छागोला गांव के भोयरा फलिया में हलमा कर गांव के लोगों ने तालाब निर्माण किया था। जिसकी जल क्षमता 10.5 करोड़ लीटर है। वर्तमान में इससे 150-200 किमी दूर नाथिया फलिया में दूसरा तालाब बनाया गया है। इस गांव में बड़ा तालाब तो है लेकिन इसके पानी का उपयोग ग्रामीण सिंचाई में करते हैं। ऐसे में गर्मी आते-आते पानी की समस्या खड़ी हो जाती है। पशुओं के लिए भी पानी नहीं मिल पाता था। पिछली बार के इस सफल प्रयोग को देखते हुए इस बार भी गांव के लोगों ने अपने गांव में पानी की कमी को दूर करने के लिए एक तालाब का निर्माण ग्राम इंजीनियर हरिसिंह सिंगाड और मांगीलाल सिंगाड के मार्गदर्शन में किया गया।

9 दिन तक किया श्रम दान

70 मीटर चौड़ाई, 7 मीटर गहराई व 120 मीटर लम्बे इस नवीन तालाब का निर्माण ग्रामीणों ने 9 दिन हलमा के माध्यम से पूरा कर दिया है। इस तालाब में रोजाना सौ से डेढ़ सौ लोग अपने घर से खाना और गैली-तगारी-फावड़ा लेकर सुबह से शाम तक कार्य करते थे। इस विशाल जन भागीदारी और शिवगंगा द्वारा जेसीबी और ट्रैक्टर के सहयोग से यह तालाब कम समय में बनकर तैयार हो गया। शिवगंगा के गत 10 वर्षों से हो रहे प्रयासों से अब गाँवों में ग्राम समृद्धि टोलियाँ बन रही हैं, जो उस गांव के समग्र विकास के बारे में मिलकर विचार करती हैं और उन पर काम करती हैं।

'प्लास्टिक मुक्त गांव' अभियान भी

छागेला की ग्राम समृद्धि टोली द्वारा पूरे गांव के पानी का मास्टर प्लान भी तैयार किया गया है, जिसको आधार बनाकर भविष्य में भी रचनाओं का निर्माण गांव की समस्या के समाधान के लिए किया जाएगा। इस टोली ने अपने गांव के मतवन को भी पुन: हरा भरा करने का संकल्प लेकर पिछले वर्ष से इस पर काम शुरू कर दिया है। इस वर्ष गांव स्वच्छता को लेकर यह टोली गांव में 'प्लास्टिक मुक्त गांव' अभियान चला रही और लगातार श्रमदान करके गांव की सफाई करते हैं और जन जागृति के अनेक कार्यक्रम करते हैं। इस पूरे कार्यक्रम में ग्राम तड़वी, गांव सरपंच सोहन सिंह सिंगाड़, पंचायत में सहायक सचिव कमलेश राठौड़ और पूरे गांव की ग्राम समृद्धि टीम ने सहयोग किया। ■

मुनि श्री तरुण सागर जी महाराज के अनमोल विचार

- भले ही लड़ लेना झगड़ लेना, पिट जाना, पीट देना मगर बोलचाल बंद मत करना क्योंकि बोलचाल के बंद होते ही सुलह के सारे दरवाजे बंद हो जाते हैं।
- कभी तुम्हारे माँ-बाप तुम्हे डांट दें तो बुरा मत मानना बल्कि सोचना गलती होने पर माँ बाप नहीं डाटेंगे तो कौन डाटेंगे और कभी छोटों से कोई गलती हो जाए तो ये सोचकर उन्हें माफ़ कर देना कि गलतियाँ छोटे नहीं करेंगे तो और कौन करेगा?

केरल त्रासदी एवं कल्याण आश्रम के राहत कार्य
साल्टलेक संस्कृति संसद का विशेष सहयोग

– भागचंद जैन, प्रांतीय उपाध्यक्ष

अद्भुत सुन्दरता का धनी, 'ईश्वर का अपना देश' कहा जाने वाला केरल इस वक्त प्रकृति की मार सह रहा है। यहां भारी बारिश के बाद आई बाढ़ ने भयंकर तांडव मचाया है। 14 जिलों में से 11 जिलों की स्थिति भयावह है। चारों ओर पानी ही पानी है। बाढ़ की वजह से 488 लोगों की मौत हो गई है एवं हजारों करोड़ की क्षति हुई है। केरल में इस सदी की यह सबसे बड़ी त्रासदी हुई है। इस दक्षिणी राज्य में 57,024 हेक्टेयर से अधिक जमीन पर लगी फसल बर्बाद हो गई। निश्चित रूप से इन सबकी भरपाई में लंबा वक्त लगेगा और जिनकी मौत हो गई, उनके परिवारों को हुआ नुकसान कभी पूरा नहीं हो सकेगा। लेकिन बाढ़ से हुई इस तबाही के बीच बचाव और राहत कार्यों से लेकर मदद के स्तर पर जो तस्वीरें सामने आई, वे किसी भी समाज के संवेदनशील होने की अहम् कसौटी है। बहुत सारे लोग बिना वक्त गवाएं अपनी ओर से बाढ़ में फंसे पीड़ितों को बचाने के लिए पानी में उतर पड़े और खुद को जोखिम में डालकर सैकड़ों लोगों की जान बचाई, उन्हें सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया। इसमें सरकार और समूचे क्षेत्र के अलावा सेना और खासतौर पर आम नागरिक समाज की जैसी भूमिका सामने आई है, वह किसी मिसाल से कम नहीं है। अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम की इकाई केरल वनवासी विकास केन्द्र के कार्यकर्ता भी तत्काल राहतकार्य में जुट गये। पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं ने इस आपदा में सहयोग करने का बीड़ा उठाया। 22 अगस्त को राष्ट्रवादी संगठनों के सहयोग से दो स्थानों पर सत्यनारायण पार्क ए.सी. मार्केट के पास तथा जमुनालाल बजाज स्ट्रीट में कैम्प लगाए गये जिसमें कार्यकर्ताओं की सराहनीय भागीदारी रही। सन्मार्ग फाउंडेशन के साथ पूर्वांचल कल्याण आश्रम, पूर्वांचल नागरिक समिति, काशी विश्वनाथ सेवा समिति एवं धनवंतरि के संयुक्त तत्वावधान में बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत सामग्री से भरा एक ट्रक रवाना किया गया। संकट की इस घड़ी में साल्टलेक संस्कृति संसद का उल्लेखनीय सहयोग रहा। उन्होंने त्रिपुर से राहत सामग्री से भरे ट्रक वायनाड भेजे एवं कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं द्वारा उनका सम्यक् वितरण किया गया। सामग्री की पैकिंग एवं परिवहन का दायित्व कोलकाता के स्वनामधन्य तोदी परिवार (लक्स इण्डस्ट्रीज) ने स्वीकारा और निभाया। उनके इस सहयोग के लिए कल्याण आश्रम परिवार विशेष आभारी है। सचमुच साल्टलेक संस्कृति संसद ने यह मिसाल पेश की है कि बाढ़ जैसी आपदा को रोका भले नहीं जा सकता लेकिन इससे पैदा हुई तकलीफ को आपसी सहभागिता और सहयोग से कम जरूर किया जा सकता है। ■

चिकित्सा शिविर : एक अनुभव

– निर्मला रुंगटा, बड़ाबाजार महिला समिति

गत् 18-19 अगस्त 2018 को बंगाल के बेलपहाड़ी तथा झिलीमिली में एक चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ। दो दिन के इस शिविर में तीन चिकित्सकों ने पांच मेडिकल विद्यार्थियों के साथ 950 रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया। इस शिविर में कोलकाता-हावड़ा महानगर से 6 बहनें तथा 9 पुरुष कार्यकर्ताओं को जाने का सौभाग्य मिला।

मेडिकल कैम्प में जाने का यह मेरा पहला अवसर था। वहाँ के छात्रावास के बच्चों और शिक्षिकाओं की सादगी, सरलता, पवित्रता, प्रेम, सच्चाई, ईमानदारी ये सब उनके व्यवहार और उनके चेहरे पर झलक रही थी जो अंतर्मन को छू गई। आज भी हमारे भारत की इतनी पवित्र शुद्ध छवि हमें इन गाँवों में देखने को मिलती है। मुझे चक्षु चिकित्सा विभाग में सहयोग देने का मौका मिला। यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहाँ 50 साल के लोगों तक के पास चश्मा नहीं है। उन्हें कभी चक्षु परीक्षण करवाने का मौका ही नहीं मिला। उन्हें चश्मा पहनने के बाद देखने में जो स्पष्टता लग रही थी उसकी खुशी उनके चेहरों पर दिखाई दे रही थी। वे कई किलोमीटर की दूरियाँ तय करके अपनी चिकित्सा करवाने आए हुए थे। सबका स्वास्थ्य परीक्षण अनुभवी डॉक्टरों द्वारा हुआ और उन्हें यथायोग्य स्वास्थ्य सुधार की औषधियाँ उपलब्ध करवाई गई। उनकी खुशी से हम सभी के दिल में एक अनोखे से कर्तव्यभाव का संचार हुआ। शिविर से लौटते समय उनके द्वारा दिए गए प्रेम व सम्मान से दिल गद्‌गद् हो उठा और आँखे नम हो गईं। ■

सिंधारा उत्सव

– ज्योति गुप्ता, संयोजिका काकुड़गाछी समिति

23 अगस्त 2018 को कल्याण भवन में सिंधारा उत्सव बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का भार काकुड़गाछी महिला समिति पर था। कुल संख्या 210 लगभग थी। कार्यक्रम महाराष्ट्र की संस्कृति पर आधारित था। सभी समितियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। नृत्य नाटिका, नाटक, नृत्य आदि से भरपूर मनोरंजन किया गया। प्रथम स्थान साल्टलेक समिति, द्वितीय स्थान जोड़ा मन्दिर समिति एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया जोड़ा बागान महिला समिति ने। सभी ने महाराष्ट्र को ध्यान में रखकर ही अपने कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।

नाश्ता और भोजन में भी महाराष्ट्र के प्रचलित व्यंजन परोसे गए। कोलकाता-हावड़ा की महिला प्रमुख ऊषाजी ने हमें बताया कि हम कल्याण आश्रम से क्यों जुड़े हैं और इससे जुड़ने से हमें क्या महसूस होता है?

कार्यक्रम के निर्णायक के तौर पर श्रीमती शुभ्रा अग्रवाल, श्रीमती श्रुति धर एवं श्रीमती उमा सराफ उपस्थित थीं जिन्होंने हमारी त्रुटियों की ओर इंगित करते हुए कार्यक्रम की सराहना भी की। बहुत ही खुशनुमा माहौल था। ■

महानगर की गतिविधियाँ

विष्णु सहस्त्रनाम एवं लक्ष्मीसूक्त का पाठ

काकुड़गाछी महिला समिति द्वारा गत 9 अगस्त को विष्णु सहस्त्रनाम एवं लक्ष्मीसूक्त के पाठ का भावपूर्ण आयोजन कल्याण भवन में किया गया। इस कार्यक्रम में 40 महिलाओं ने भक्तिपूर्वक पाठ किया, साथ ही वनवासी कार्यों पर प्रकाश डाला गया।

रक्षाबंधन उत्सव

26 अगस्त को रक्षाबंधन उत्सव के पावन दिन कोलकाता महानगर महिला समिति की सहमंत्री श्रीमती सीमा रस्तोगी, वस्तु प्रमुख श्रीमती अनिता बुबना एवं सह संगठन मंत्री श्रीमती रंजना बिहानी ने कल्याण भवन जाकर वहां के सभी कार्यकर्ताओं को रक्षासूत्र बांधा। एक युवा कार्यकर्ता सिद्धि बुबना ने भी रक्षासूत्र बांधकर राष्ट्रीय दायित्वबोध का परिचय दिया। ज्ञातव्य है कि इस वर्ष महानगर की महिला समितियों ने बिहार एवं झारखण्ड के कार्यकर्ताओं एवं वनवासी बंधुओं के लिए 9000/- राखियां भेजी। सुन्दरबन के गोसाबा द्वीप समूह में चल रहे प्रीतिलता छात्रावास की छात्राओं एवं कार्यकर्ताओं हेतु भी राखियां भेजी गई।

रिसड़ा में महिला समिति का गठन

पूर्वांचल कल्याण आश्रम उत्तर हावड़ा की महिला प्रमुख श्रीमती कुसुम सरावगी, श्री अरूण ककरानिया एवं स्थानीय कार्यकर्ताओं के सहयोग से रिसड़ा में नवीन महिला समिति का गठन किया गया है। इसके साथ ही हावड़ा महानगर में महिला समितियों की संख्या 3 हो गई है।

सिलाई प्रशिक्षण

महानगर महिला समिति द्वारा सिलाई प्रशिक्षण का क्रम अनवरत रूप से जारी है। विगत 28 अगस्त 2018 से शुरू हुए शिविर में 17 लड़कियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इनमें से 15 बालिकाएं बंगाल से एवं 2 ओड़िशा से थी। इनमें से एक महिला कुमारी छात्रावास प्रमुख है एवं एक सुन्दरगढ़ का छात्रावास संभालती है।

फोरम प्रवेश महिला समिति

वनवासी सेवा एवं संगठन कार्य निरन्तर विकासमान है। श्रीमती अनिता अग्रवाल के प्रयासों से हावड़ा महानगर में फोरम प्रवेश महिला समिति की स्थापना दो माह पूर्व हुई। बहनों में कार्य के प्रति अतीव उत्साह है। वे अब तक स्थानीय परिवारों में 120 सेवापात्र रख चुकी हैं एवं शीघ्र ही एक सेवापात्र सम्मेलन करने की योजना है। नियमित बैठकों का क्रम प्रारंभ हो गया है।

कोलकाता में उजास समिति का गठन

कोलकाता के उजास हाउसिंग कांप्लेक्स में गत 4 वर्षों से मकर संक्रान्ति का कैम्प का नियमित रूप से आयोजन हो रहा है। वहाँ की महिलाएं कल्याण आश्रम के सेवा एवं संगठन कार्यों के प्रति स्वभावत: आदर भाव रखती हैं। इसी आदर भाव को सार्थक मोड़ देते हुए महिला प्रमुख श्रीमती इंदु नाथानी एवं श्रीमती अरुणा शाह के प्रयासों से वहां महिला समिति का विधिवत निर्माण हो गया है। समिति की बहनें संगठन की सभी गतिविधियों में पूरे मन से सहभागिता कर रही हैं। ■

माननीय अटल जी के निधन पर राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदेवराम जी की भावपूर्ण श्रद्धांजलि

दिनांक 16 अगस्त 2018 को सायंकाल एक अत्यंत दु:खदायक समाचार मिला-**'श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अंतिम सांस ली।** यह जानकर जो दु:ख हुआ उसके वर्णन के लिए शब्द असमर्थ हैं। सारा देश इस समाचार के साथ शोकमग्न हो गया। देश के पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न, राजनीति क्षेत्र के सर्वमान्य नेता, कवि, लेखक, उत्तम वक्ता, जैसे बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी अटल जी जनजाति समाज के हितचिंतक भी थे। मुम्बई में जब वनवासी कल्याण आश्रम की ओर से राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया तब वे पधारे थे। उन्होंने अपने अनोखे अंदाज में वनवासी खिलाड़ियों को कहा कि मैं भी राजनीति के मैदान का खिलाड़ी हूँ। सन् 1978 में जब वे विदेश मंत्री थे तब झारखण्ड के लातेहार जिला के कल्याण आश्रम के गारू के चिकित्सा केन्द्र पर आए थे और जब प्रधानमंत्री रहे तब 1 फरवरी 2004 को वनवासी कल्याण आश्रम के स्वर्ण जयंती महोत्सव निमित्त भी राँची पधारे थे। एक सार्वजनिक सभा में उन्होंने आदरणीय बालासाहब देशपाण्डे जी का स्मरण कर कल्याण आश्रम द्वारा वनवासी समाज के लिए किए गये प्रयासों की सराहना की थी।

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनकी पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

ॐ शांति शांति शांति। ■

अनुकरणीय

- वनवासियों के उत्थान हेतु कार्यरत कल्याण आश्रम की कार्य पद्धति एवं कार्यकर्ताओं के समर्पण, निष्ठा से महानगर का वृहत्तर समाज सहज ही आकर्षित हो रहा है। कहा जा सकता है कि हमने अपने सेवा एवं संगठन कार्यों के माध्यम से महानगर में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। विविध स्वयंसेवी संस्थाएं कल्याण आश्रम को अनुदान देकर कृतार्थता का अनुभव करती हैं। इसी श्रृंखला में मारवाड़ी युवा मंच रिसड़ा द्वारा एक तालाब निर्माण हेतु 30 हजार रूपये का अनुदान दिया गया। कल्याण आश्रम परिवार सहयोगकर्ताओं के प्रति साधुवाद ज्ञापित करता है एवं आशा करता है कि भविष्य में भी विराट समाज का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे।
- अपने परिवार के मंगल अवसर पर तो प्राय: सभी वनवासी का स्मरण कर अनुदान देते हैं, परन्तु अपने पूर्वजों के श्राद्ध दिवस पर भी वनवासी को याद करने की परम्परा महानगर में शुरू हो गई है। वनवासी के प्रति समर्पण का भाव रखते हुए श्री सुनील कुमार सिंघी एवं श्री अरविन्द सिंघी ने अपनी स्वर्गीय माताजी अमराव देवी सिंघी की पुण्यतिथि पर वनवासी सेवाकार्य हेतु अनुदान देकर समाज में एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।
- गत नैपुण्य शिविर में कोलकाता एवं हावड़ा नगर के कार्यकर्ता रानीगंज गए थे। वहां गौ ग्राम योजना के अन्तर्गत संचालित गौशाला देखने सभी कायकर्ता गए। राष्ट्रवादी संस्थाओं के प्रति एकात्म भाव रखते हुए हमारे कार्यकर्ताओं ने 25,000/- का अनुदान गौशाला को दिया जो राष्ट्रोत्थान के प्रकल्पों के प्रति कार्यकर्ताओं के दायित्वबोध का परिचायक है। ■

अनुभव के बोल

हिंदी राष्ट्रभाषा ही नहीं एक संस्कृति भी है

– अतुल जोग, अ. भा. संगठन मंत्री

लगभग 1995 की बात होगी। मैं कल्याण आश्रम के तत्कालिन क्षेत्र संगठन मंत्री श्री वसंतराव भट्ट और नागालैण्ड के प्रमुख कार्यकर्ता श्री जगदम्बा मल्ल के साथ दोपहर के समय में एक परिवार में मिलने के लिए गया। घर कहें तो दो बांस से बनी एक झोंपड़ी और पास में ऐसी ही और एक झोंपड़ी थी। अंदर गए तो एक प्रसन्न मुद्रा के व्यक्ति ने स्वागत किया। परिचय करने के बाद पता चला कि उनका नाम पियोंग तेम्जन जमीर है। वह आओ नागा समाज के व्यक्ति हैं। लेकिन वे तो अच्छी हिन्दी बोल रहे थे। थोड़ी देर बाद उनकी पत्नी और सुपुत्री रुपाचिला बाहर आयीं। वे दोनों भी अच्छी हिंदी में बात कर रहीं थी। मेरे लिए आश्चर्य था। क्योंकि किसी नागा परिवार को इतनी अच्छी प्रकार से राष्ट्रभाषा हिंदी बोलते हुए पहली बार देखा।

बाद में परिचय हुआ तो और भी जानकारी प्राप्त हुई। गुरुजी हिंदी सीखने वाले नागा समाज के पहले व्यक्ति हैं। विद्यालय में हिंदी सीखने में प्रारंभ में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा क्योंकि हिंदी भाषा का आओ भाषा के साथ कोई तालमेल नहीं है। एक प्रकार से हिंदी उनके लिए परकीय भाषा ही थी। लेकिन पढ़ने की रुचि उत्पन्न हुई। बाद में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की स्थानीय संस्था से हिंदी की पढ़ाई पूरी की और हिंदी सिखाने का मानों उन्होंने व्रत ही ले लिया। क्योंकि जिस नागालैण्ड में अंग्रेजी राज्यभाषा हो, अंग्रेजी शिक्षा का एकमात्र माध्यम हो ऐसे नागालैण्ड में हिंदी सिखाने का संकल्प करना एक दु:साहस ही था। इतना ही नहीं इस कारण कई स्थानीय लोगों ने उनकी उपेक्षा की, मजाक भी उड़ाया तो कई ने इसे मूर्खता बताया। कई लोगों ने तो इसलिए भी विरोध किया कि नागा विद्यार्थी हिंदी सीखने से हिंदू हो जाऐंगे। लेकिन उन्होंने बताया मैं स्वयं ईसाई हूँ। लेकिन उनका मानना है कि हिंदी दुनिया की समृद्ध भाषओं में से एक भाषा है। इसे सीखना हर नागा बंधु की आवश्यकता है।

उनसे जब पूछा तो उन्होंने अपना परिचय राष्ट्रभाषा के प्रचारक के रुप में दिया। उनको पूछा कि आप तो हिंदी पढ़ाते हैं तो फिर अपने आपको हिंदी के शिक्षक क्यों नहीं कहते। उन्होंने बताया कि हिंदी को जन-जन तक पहुँचाना, यही मेरे जीवन का लक्ष्य है। इसलिए मैं केवल हिंदी ही नहीं अपितु हिंदी का महत्व भी नागा समाज को समझाता हूँ। उनको हिंदी पढ़ने के लिए प्रेरित करता हूँ। पियोंगतेम्जन जी की पोशाक भी कुर्ता पायजामा ही है। वे सबका नमस्कार से स्वागत करते हैं। उन्होंने प्रारंभ में स्वयं झोंपड़ी में रहकर और साथ में विभिन्न जनजाति के नागा छात्रों को साथ में रखकर हिंदी सिखाई। वे उनके छात्रावास प्रमुख नहीं बने, वे पिता बने। उनकी पत्नी, सुपुत्री, सुपुत्र सभी गुरुजी के संकल्प में आबद्ध होकर राष्ट्रभाषा की सेवा कर रहे हैं। सब उनको गुरुजी और उनके पत्नी को गुरुमाता कहते हैं। वे हर वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस बड़े पैमाने पर मनाते हैं। मंच पर बड़े अक्षरों में लिखा रहता है *भारत जननी एक हृदय हो*। सन् 2000 में शिक्षा सुधार के विषय

पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन कोहिमा में किया गया था। विचार गोष्ठी में अनेक शिक्षाविद्, विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ लोग उपस्थित थे। सभी लोग अपने अनुभवों के आधार पर बड़े विद्वत्तापूर्ण विषयों का प्रतिपादन कर रहे थे। पियोंगतेम्जन गुरुजी भी उपस्थित थे। उनको लगभग अंतिम समय में बोलने का मौका मिला। उन्होंने अपना व्याख्यान यह कहते हुए प्रारंभ किया कि मुझे सवेरे से समझ में नहीं आ रहा था कि मैं भारत में हूँ या अमेरिका अथवा यूरोप में। क्योंकि सब लोग अंग्रेजी में बोल रहे थे। लेकिन मैं तो भारतीय होने के नाते राष्ट्रभाषा हिंदी में ही बोलूंगा। मुझे चिंता है, मेरी नागा जनजातीय भाषाओं की। क्योंकि अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई नागा भाषाओं को दी हुई रोमन लिपि के कारण हमारी नागा भाषाएँ खतरे में हैं। मेरा मानना है कि इन भाषाओं को यदि देवनागरी लिपि में लिखा जाएगा तो इन भाषाओं का भारत के लोगों में प्रचार प्रसार होगा और इनको सीखने एवं समझने का प्रयास करेंगे। अत: मेरा सपना है कि नागा जनजाति की भाषाओं को देवनागरी में लिखना आरंभ किया जाए। मुझे लगा इतना सटीक चिंतन करने वाले लोग नागा समाज में भी हैं। इससे आज एक आशा की किरण दिखायी दे रही है। आज उनकी चार दशकों की तपस्या के फलस्वरुप वृहद् राष्ट्रभाषा हिंदी संस्थान भारत सरकार के सहयोग से बन गया है। उनके सैकड़ों विद्यार्थी आज हिंदी के अध्यापक बन गए हैं। *हिंदी केवल भाषा नहीं एक संस्कृति भी है। एक विचार है और देश को जोड़ने वाला एक सूत्र है।* आज नागालैण्ड के बच्चों को हिंदी आती है। क्या आपके बच्चों को हिंदी आती है न कि हिंग्लिश। ■

अभिनंदन

रातूत नुनीसा का दिल्ली कॉलेज ऑफ फाइन ऑर्ट्स में दाखिला

दिल्ली स्थित वनवासी छात्रावास के छात्र **रातूत नुनीसा** ने **दिल्ली कॉलेज ऑफ फाइन ऑर्ट्स** की ओपन प्रवेश परीक्षा में 13वाँ स्थान प्राप्त किया। रातूत 2008 में बादली छात्रावास आरंभ होने के समय से यहां पर अध्ययन कर रहा है। बचपन से Drawing का अभ्यास और चित्रकारी का अभ्यास करता था। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के पेंटिग प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त कर चुका है। छात्रावास में अधिकतर चित्र भी इसने ही बनाए हैं। कला क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु रातूत को हम शुभेच्छा देते हैं।

भारतीय खिलाड़ियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

भारतीय खिलाड़ियों ने इण्डोनेशिया के जकार्ता और पालेमबांग में हुए 18वें एशियाई खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पदक जीतने वाले खिलाड़ियों के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली स्थित अपने आवास पर मुलाकात की और उन्हें उनके शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों के बेहतर प्रदर्शन से भारत के दर्जे और गौरव में इजाफा हुआ है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि पदक विजेता प्रसिद्धि और पुरस्कारों की चकाचौंध में नहीं खोएंगे और पूरा ध्यान उत्कृष्टता में लगाएंगे। कल्याण आश्रम परिवार खिलाड़ियों के अनुशासन, समर्पण व साहस को सलाम करते हुए आशा करता है कि देश इन खिलाड़ियों के प्रयासों से प्रेरणा लेगा। ■

भारतीयों के लिए शर्मनाक

– सावित्री रावत, साल्टलेक समिति

आज दूरदर्शन पर एक बहस सुन रही थी। विषय था जम्मू कश्मीर में धारा 35ए को हटाने हेतु आगामी 6 अगस्त को उच्चतम न्यायालय में सुनवाई। आश्चर्य हुआ कि भारतीयों की चिंतनधारा किस दिशा में जा रही है।

अलगाववादी इसका विरोध करें तो समझ में आता है; वे तो भारत के विरुद्ध विष वमन के अतिरिक्त कुछ जानते ही नहीं हैं। उन्हें तो भारत का विरोध मात्र ही आता है। लेकिन जब हमारे ही लोग इन अलगाववादियों की भाषा बोलते हैं तो आश्चर्य होता है कि क्या ये लोग भारत राष्ट्र से सचमुच प्यार करते हैं? धर्म निरपेक्षता की पैरवी करने वाली पार्टियाँ जरा गौर करें। जम्मू कश्मीर से पंडितों को खदेड़ दिया गया है। आए दिन यहाँ हमारा तिरंगा जला दिया जाता है।

भारत के किसी भी अन्य प्रान्त के लोग को वहाँ रहने तथा जमीन खरीदने की अनुमति नहीं है। उनकी अपनी बहन-बेटियां अगर किसी और प्रांत के पुरुष से विवाह करती हैं तो अपने सारे अधिकारों से वंचित कर दी जाती हैं।

अगर कोई पुरुष पाकिस्तानी महिला से विवाह कर ले तो उसको सारे अधिकार प्राप्त हो जाते हैं। इसका सीधा सा अर्थ यह है कि भारत की सारी सुख-सुविधाएं सब कुछ कश्मीरी लोगों के लिए हैं, लेकिन कश्मीर का कुछ भी भारत छोड़कर, अन्य लोगों के लिए है। निरंतर आने वाले आतंकारियों से रक्षा करने वाली हमारी बहादुर सेना के ऊपर पत्थर बरसाए जाते हैं। यह किसी भी भारतीय के लिए असहनीय होना चाहिए। ■

पिंडवाड़ा में प्रशिक्षण शिविर

– उमा गोयल, कोलकाता महानगर

गत् 20 से 22 जुलाई 2018 को उत्तर क्षेत्र की महिला कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण शिविर राजस्थान के पिंडवाड़ा (जिला सिरोही) में राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद द्वारा संचालित आदर्श विद्या मन्दिर के परिसर में आयोजित किया गया। इसमें हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखण्ड तथा राजस्थान की लगभग 90 महिलाओं ने भाग लिया। कोलकाता महानगर से मैं एवं श्रीमती निर्मला केजरीवाल इस शिविर में सहभागी हुए। अखिल भारतीय उपाध्यक्ष श्री कृपा प्रसाद सिंह, अ.भा. सह नगरीय कार्य प्रमुख व उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री भगवान सहाय जी, प्रान्तीय उपाध्यक्षा श्रीमती राधिका लड्ढा, श्रीमती अनुराधा भाटिया, सुश्री वर्षा पराडकर जैसी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सान्निध्य तथा मार्गदर्शन हमें प्राप्त हुआ। इस त्रिदिवसीय शिविर में विभिन्न विषयों यथा- नगरीय कार्य की आवश्यकता व महत्व, परिवार की अनुकूलता, कुटुम्ब नियोजन, महिलाओं का स्वास्थ्य, सामाजिक कार्य की अवधारणा, संगठन के विभिन्न आयामों में महिलाओं की भूमिका व सहभागिता, वनवासियों की गौरवशाली परम्पराएं, कार्यकर्ताओं का दायित्वबोध व कार्य पद्धति, वनवासी वीर-वीरांगनाओं आदि पर विस्तार से चिंतन-मंथन हुआ। कोलकाता महानगर की महिलाओं द्वारा नगरीय कार्य के विभिन्न आयामों पर एक चर्चात्मक सत्र हमने भी लिया। उदयपुर के कार्यालय में एक बैठक आयोजित की गई जिसमें कोलकाता महानगर के विभिन्न कार्यों को हमने Power Point Presentation द्वारा बताया जिसकी सभी ने सराहना की। ■

पुरुलिया एवं झाल्दा में कार्य विस्तार हेतु प्रयास

– इन्दु नाथानी, कोलकाता महानगर, महिला प्रमुख

बंगाल में कोलकाता के अतिरिक्त अन्य प्रांतों में भी नगरीय कार्य का विस्तार हो इस योजना के अनुरूप अलग-अलग नगरों में नैपुण्य शिविर का आयोजन करते हैं। कुछ वर्षों पहले पुरुलिया में शिविर का आयोजन हुआ। विभिन्न परिवारों से सम्पर्क किया गया। वनयात्राएं भी अक्सर होती रहती हैं। पुरुलिया में वनवासी बालिकाओं के लिए **निवेदिता कन्या छात्रावास** भी है। गत अगस्त माह में कोलकाता से 3 महिला कार्यकर्ता- स्नेहलता बैद, कविता टिबड़ेवाल और मैं कार्य विस्तार हेतु पुरुलिया गए। वहाँ पर मारवाड़ी महिला मंच की बहनों ने प्रदर्शनी सहबिक्री का आयोजन किया था एवं उन्होंने अ.भा. महिला प्रमुख सुश्री वीणापाणिदास शर्मा के हाथों प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन करवाया। बहनों को कल्याण आश्रम के उद्देश्य एवं कार्यों के बारे में सविस्तार बताया गया। पुरुलिया की बहनों ने कार्य के प्रति रुझान प्रकट किया एवं हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसी प्रकार झाल्दा की बहनों को जोड़ने के लिए जोड़ाबागान समिति की कार्यकर्ता श्रीमती कविता टिबड़ेवाल कई महीनों से प्रयत्नशील हैं। उनके प्रयास से झाल्दा की बहनों में वनवासी समाज के प्रति दायित्वबोध का जागरण हुआ है। वे अपने परिवार के मांगलिक अवसरों यथा बच्चों के जन्मदिन आदि पर छात्रावास के बच्चों के लिए नाश्ता लेकर जाती हैं। रक्षाबंधन के अवसर पर बहनों ने छात्रावास में जाकर सभी भाइयों को रक्षासूत्र बांधा। हमें विश्वास है कि धीरे-धीरे कार्य गति पकड़ लेगा। ■

हर्षोल्लास से मनाया अखण्ड भारत दिवस

– कल्पना भट्टाचार्य, मानिकतल्ला समिति

गत बुधवार 15 अगस्त 2018 को स्थानीय कल्याण भवन में अखण्ड भारत एवं ऋषि अरविन्द का आविर्भाव दिवस भावपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री केशवराव दीक्षित, अखिल भारतीय सह प्रचारक प्रमुख श्री अद्वैतचरण दत्त, ऋषि अरविन्द पर शोध करने वाले श्री क्षितिप्रसाद दत्त एवं पूर्वांचल कल्याण आश्रम के सभापति श्री विश्वनाथ बिस्वास ने भारत माता एवं ऋषि अरविन्द के चित्र पर पुष्पांजलि समर्पित कर द्वीप प्रज्ज्वलन किया। मानिकतल्ला महिला समिति द्वारा सुमधुर स्वर में वन्देमातरम् गीत का गायन किया गया। मंचस्थ सभी महानुभावों को पुष्प गुच्छ भेंटकर अभिवादन किया गया। शिवपुर महिला समिति एवं कुम्हारटोली समिति की बहनों ने भी देशभक्तिपूर्ण ओजस्वी गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का सर्वाधिक आत्मीय पक्ष था बंगाल के सभी पूर्णकालीन पुरुष एवं महिला कार्यकर्ताओं की माताओं का भी अभिनंदन। 6 कार्यकर्ताओं - उत्तम महतो, मौसमी टुडू, प्रतिमा मुर्मू, सुशील सोरेन, लक्खीमणी हासदा एवं सरस्वती सिंह की माताएं आयोजन स्थल पर उपस्थित थीं। इन सभी का पुष्प गुच्छ, साड़ी एवं राम-हनुमान की आलिंगनबद्ध तस्वीर भेंट कर भावभीना अभिनंदन किया गया। जो माताएं किसी कारणवश नहीं पहुँच सकी उन्हें स्नेह-भेंट पहुंचा दी गई। मुख्य वक्ता माननीय श्री अद्वैत चरण दत्त ने अपने प्रेरक वक्तव्य में देशहित के लिए बलिदान एवं समर्पण भाव की प्रेरणा दी। सहभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। ■

शोक संवाद

अटल जी नहीं रहे

भारतीय राजनीति के सर्वमान्य नेता एवं देश के तीन बार प्रधानमंत्री रहे जननायक,भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी ने वृहस्पतिवार 16 अगस्त सायं 5 बजकर 5 मिनट पर अन्तिम सांस ली। वे 93 वर्ष के थे और करीब 9 साल से अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी नेतृत्व क्षमता, भाषण देने की कला, देशभक्ति का जज्बा और मतभेदों के बाद भी प्रतिद्वंदियों को जीतने की उनकी शानदार क्षमता का सभी देशवासियों पर गहरा प्रभाव है। संसद के भीतर सभी राजनैतिक दलों को एक साथ लेकर चलने की प्रबल इच्छा शक्ति थी। दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देशहित को सर्वोपरि रखने के जितने और जैसे उदाहरण वाजपेयी ने पेश किए वैसा उदाहरण दूसरा मिलना दुर्लभ है। ■

जैन मुनि तरुण सागर जी का निधन

क्रांतिकारी जैन मुनि तरुण सागर जी का शनिवार, 1 सितम्बर 2018 को दिल्ली के कृष्णा नगर इलाके में स्थित राधापुरी जैन मन्दिर में समाधिपूर्वक देवलोक गमन हो गया। वे 51 वर्ष के थे। वे पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। धर्म के साथ साथ जैन मुनि तरुण सागर महाराज सामाजिक जीवन में भी खासा दखल रखते थे। उन्होंने देश के कई विधानसभाओं में भी प्रवचन दिए। वे अपने कड़वे प्रवचन के लिए प्रसिद्ध रहे। समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करने के लिए उन्होंने काफी प्रयास किए। वे प्रेरणा के स्रोत, दया के सागर और करुणा के आगार थे। भारतीय समाज के लिए उनका निर्वाण एक शून्य का निर्माण कर गया है। ■

रविन्द्र लढ़िया पंचतत्व में विलीन

हावड़ा महानगर कार्यकारिणी के सक्रिय समर्पित कार्यकर्ता श्री रविन्द्र कुमार लढ़िया का गत 12 अगस्त 2018 को देहावसान हो गया। वे 60 वर्ष के थे। बाल्यकाल से स्वयंसेवक रहे रविन्द्रजी गत 27 वर्षों से कल्याण आश्रम के प्रति मनसा वाचा कर्मणा समर्पित रहे। उन्हीं के प्रयासों से उत्तर हावड़ा पुरुष एवं महिला समिति का गठन हुआ। उत्तर हावड़ा में संक्रांति कैंपों की शुरूआत करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। गत डेढ़ वर्षों से गले के कैंसर से पीड़ित थे। अस्वस्थता के बावजूद संक्रांति शिविर में उपस्थित रहकर वनवासी बंधुओं के लिए संग्रह किया। उनका असमय चले जाना कल्याण आश्रम परिवार के लिए अपूरणीय क्षति है। ■

कोलकाता हावड़ा महानगर संभाग प्रमुख श्रीमती ऊषा अग्रवाल की पूज्य माताश्री **श्रीमती आशा बजाज** का गत 7 सितम्बर 2018 को मुम्बई में निधन हो गया। कल्याण आश्रम के सेवाकार्यों के प्रति उनका सदैव सहयोग रहता था। ■

पूर्वांचल कल्याण आश्रम सभी दिवंगत महानुभावों के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि ज्ञापित करते हुए उनकी आत्मा की चिरशान्ति की कामना करता है।

बोधकथा.....

एक बूंद

उस दिन महाराजा भरत अपने दरबार में बैठे थे। दरबार में प्रजा पर लगने वाले कर पर चर्चा हो रही थी। उसी समय एक व्यक्ति दरबार में आया और महाराज भरत से पूछने लगा, 'महाराज, आप इतने बड़े साम्राज्य का संचालन करते हुए भी जीवन में निर्लिप्त भाव से कैसे रह लेते हैं?' राजा ने उस व्यक्ति को कहा-'तेल से भरा हुआ कटोरा लेकर तुम राज्य के सारे बाजारों में घूम आओ। लेकिन ध्यान रहे कि यदि कटोरे से तेल की एक बूंद भी नीचे गिरा दी, तो तुम फांसी के तख्ते पर लटका दिए जाओगे।' भरत के आदेश से भयभीत हुआ व्यक्ति आदेशानुसार सम्पूर्ण नगर में पूरी सावधानी के साथ घूमकर राजा भरत के पास लौटा। रास्ते में यद्यपि नृत्य, नाटक, संगीत आदि मनोरंजन के कई आयोजन चल रहे थे, किन्तु वह व्यक्ति मृत्यु के भय से किसी पर दृष्टि न डाल सका। भरत ने पूछा, 'तुम पूरे नगर में घूम आए तो बताओ नगर में तुमने क्या देखा? व्यक्ति ने उत्तर दिया-'महाराज, मैंने कटोरे के अलावा और कुछ नहीं देखा।' भरत ने फिर सवाल किया-'तुमने नगर में हो रहे नाटक, संगीत आदि मंडलियों के अनेक सुन्दर कार्यक्रम नहीं देखे?' इस पर वह व्यक्ति बोला-'राजन्, जिसके सामने मृत्यु नाच रही हो, वह कोई मनोरंजक कार्यक्रम कैसे देख सकता है? मृत्यु का भय कैसा होता है, यह तो भयभीत व्यक्ति ही जान सकता है।' यह सुनकर महाराजा भरत ने कहा-'मैं प्रत्येक क्षण जागरूक रहता हूँ। मृत्यु का मुझे हर क्षण ध्यान रहता है। इसलिए साम्राज्य का सुख-वैभव मुझे परेशान नहीं करता। मैं इसका आनन्द लेते हुए भी उसमें आसक्त नहीं होता। मैं निर्लिप्त रहता हूँ।' उस व्यक्ति को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था। ■

कविता.....

कदम मिलाकर चलना होगा

- अटल बिहारी वाजपेयी

बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ
पावों के नीचे अंगारे
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ
निज हाथों से हँसते-हँसते
आग लगाकर जलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा

हास्य-रुदन में, तूफानों में
अगर असंख्यक बलिदानों में
उद्यानों में, वीरानों में
अपमानों में, सम्मानों में
उन्नत मस्तक, उभरा सीना
पीड़ाओं में पलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा

उजियारे में, अंधकार में
कल कहार में, बीच धार में
घोर घृणा में, पूत प्यार में
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में
जीवन के शत-शत आकर्षक
अरमानों को ढलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा

सम्मुख फैला अमर ध्येय पथ
प्रगति चिरंतन कैसा इति अथ
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ
असफल, सफल समान मनोरथ
सब कुछ देकर कुछ न माँगते
पावस बनकर ढलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

कुश काँटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुवन,
परहित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा। ■

कल्याण आश्रम के साथ अटलजी के अन्तरंग पल

माना तुम देह से हो वञ्चित, तव चित्र पर ही चित्त समर्पित;
है **अटल** सत्य इस मर्त्यलोक में, तुम यत्र-तत्र-सर्वत्र उपस्थित ।।

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book - Post